अतीत रा गीतड़ा

कुं० उम्मेदसिंह
बीन्दासर

प्राप्तिस्थान :—

कुं० मेघसिंह सैंडू
रजपूत बोर्डिंग हाउस
बीकानेर

(सर्वाधीकार लेखक द्वारा सुरक्षित)

न व रा त्रि
चैत्र शुक्ला एकम
संवत् २०१७

मूल्य पचास नए पैसे

प्रकाशक : —
भँवर भीमसिंह (गोपालपुरा)

दो बात्यां

महाराजा री ओलूं लिखणे रे बाद मैं आ म्हारी दूसरी रचना है, पण हूँ इणने रचना कहवण रो साहस नहीं कर सकुँ क्यु'क जका गीत लिखतां म्हारो दुःख उमड्यो बण नै देखतां हूँ म्नै सन्तोष देवण री म्हारो दुःख कम करणे री कोशीश करी है पतो नहीं आ म्हारी वेदना म्नें जीतो बाल्यों है समाज इण सुँ कितरो'क बलसी अर बलपरो'र अपणे दर्द सुं इण महान जाति रो करतब पालन करण री प्रेरणा लेयर उठ ज्यासी।

इण रचनां नै सम्पूर्ण करण मैं कुं० फूलसिंह जी जिको सहयोग करयो उणां री प्रशंसा कियां बिना आ बात अधूरी लागसी।

—लेखक

"करतब करणी सुं पहला
हूँ नहीं मांगु वरदान
उण पहला जे देणो चाहो
तो दो करतब भगवान"

विषय सूची

१. बैही रजपूती बाताँ ही	१
२. आ चारण घर रे गाता हा	४
३. ओलूँ	६
४. भूलूं किया भुलावे जग	८
५. हूँ किया रुकुं रण मैं जातो	१०
६. कह दिया मरयो रजपूत अठे	१२
७. दिल्ली लेवण रा सपना तो	१६
८. जद इयाँ बगावत हूँ करदी	२०
९. पण नहीं झुक्या सो नहीं झुक्या	२५
१०. हूँ तो भोलो पग रे भुल्यो	२७
११. कोई मारे एड़ी खेंच कटारी	३१
१२. ब कठै गया सिरदार	३३
१३. तूं क्यूं हूँस्यो बतादे बीरा	३५
१४. मत पूछ	३८

बै ही रजपूती बातां ही

बळी मशालां खंग चमक्या
घोड़ाँ स्युं जा घोड़ा भिड़ग्या
आँख्यां जगती ही खीरां सी बै ही रजपूती रातां ही ।
बै ही रजपूती बातां ही ॥

नींद आँख में भरी रोवती
मौत जिणां रै साथ सोवती
खतोका बैरी उठजा रे अै रजपूताँ री रीताँ ही ।
बै ही रजपूती बातां ही ॥

टकरी परबत स्युं छाती ही
ना पीठ दिखाणी आती ही
बै नाहर बावळा ज्युं लड़ता कुण मूँछ उखाड़ै जीतां ही ।
बै ही रजपूती बातां ही ॥

जद जैचन्द रै दरबार बीच
चारण ले आई माँग शीश
आभो ऊँचो रै जगदे थारो आ पलटे जुग री गाथा ही ।
बै ही रजपूती बातां ही ॥

सज चाली सौला सिणगार
सतियाँ म्हारी गढ़ गिरनार
आभो तो रह्ग्यो हो हेठो अर छोटी धरती माता ही।
बै ही रजपूती बातां ही ॥

दिन मैं लड़ता सगलाँ आगे
रातुँ रमता चोपड़ सागे
जैसलमेर अडाणो लाग्यो मूलराज रै पड़तां ही।
बै ही रजपूती बातां ही ॥

आखु आँख्याँ देख्यो अकबर
पहरयाँ निकल्यो बांको बख्तर
गर्भीलो चन्द्रसैन कह चाल्यो क्युँ शीश झुके म्हां जीतां ही।
बै ही रजपूती बातां ही।

जद शीश हथेली ले रमता
तज महल जंगल मैं ही फिरता
अंग अंग में लोही रा झरणा राणाजी ज्यांमै न्हाता ही।
बै ही रजपूती बातां ही ॥

तालीकोट कदैं चित्तोड़
हल्दीघाटी रणथम्भौर
मठै लड़या रजपूत बठै लोही रा समदर बहता ही।
बै ही रजपूती बातां ही ॥

गहरो घणो भरोसो ज्याँरो
रण मरियां मिलै सुरगड़ो प्यारो
बै बचनां साँचा विश्वासां पर जीता हा अर मरता ही।
बै ही रजपूती बातां ही ॥

आ चारण घर घर गाता हा

सूत्या रण में वीर अजाणा हा
पण वैरी रा दियां सिराणा हा
धड़ तो खाधा जंगली जीवां पण साबत औज्यूँ माथा हा ।
आ चारण घर घर गाता हा ॥

वै सैलां स्युँ छाती टकराता,
विष रा प्यालां पर झुक जाता,
खिवता बिजली ज्यूँ खिचर जद वैरी बादल बण छा जाता हा ।
आ चारण घर घर गाता हा ॥

वां री बांकी जीवण री मठोठ,
हँसता हा मरतां तिसिया होठ,
हँसतो माथो अलगो पड़ियो पण खंग हाथां में हिलता हा ।
आ चारण घर घर गाता हा ॥

ज्याँरा टाबरिया भूखां मरता,
हिंवड़े रा टूक टूक झुरता,
नागी चट्टानां पर बैठ्या जद राणा धीरज धरता हा ।
आ चारण घर घर गाता हा ॥

जद आंख आंपरी खारी ही,
सिंघासण पड़ी कटारी ही,
अमरसिंह राठौड़ नागोरी घण जोराला मदमाता हा ।
आ चारण घर घर गाता हा ॥

मरु री बलती रेती मैं,
दुर्गा री देखी भगती मैं,
लोही रै भरिये भाले में हँस पोयोड़ी रोटी खाता हा ।
आ चारण घर घर गाता हा ॥

देह अरियां रै खंग स्युँ कटती,
मां और सती संग हो जाती,
बचै फूठरे घर आंगण जद बालक सूना रमता हा ।
आ चारण घर घर गाता हा ॥

औलूँ

म्हांर चारण भाट पुरोहित
गौरव गीत सुणावै है
बिसरायोड़ा दिनड़ां थांरी
औज्युँ औलयुँ आवै है

दिल्ली रो दरबार भरयो
जद राजावां उमरावां स्युँ
पण राणा री खाली कुर्सी
हूँ देखी कर्जन आंख्यां स्युँ

और सुणावै वाँ दिवशां मैं
जद जीवन ही थकियोड़ो हो
दुर्गादास हो मरुधर मैं
बिन पाणी कमल बचयोड़ो हो

दंग देख रहगी दिल्ली रहगी
दो हाडी आला हाथां नै
गिण कठै सक्यो संसार आजतक
वां कटियोड़ां माथां नै

आज अडीकै साथीड़ा
केशरिया करलो रजपूतां
आभे मैं इन्द्र धनुष मण्डग्यो
थे कांई करो औज्युँ सूता

उठ जाग भवान्ते थांरा पुरखा
शँख बजाता रण मांही
पल मैं घमसाण मचा देता
कर देता जग लोही लोही

थारे क्रोध कांपतो समन्दर
भाखर तिरणा पाणी मैं
धरती झुकी सम्राट झुक्या
देव झुक्या रजधानी मैं

भूलूँ कियां भुलावे जग

भूलूँ कियां भुलावै जग
बां गौरव री बातां नै
चांद चढ्यो आभे री
बां उजलोड़ी रातां नै

देखूँ देवगिरि रै खण्डहर
बीरां तेज तड़पतां नै
रणत भँवर री ऊँचाई स्युँ
दुसमण घणा लुढ़कतां नै

हल्दीघाटी में उग्यो सूर
ले सोने री परभातां नै
ऊँटालै रै दरवाजे पर
छाती सूल अड़ातां नै

रोकूँ कियां याव अरड़ावै
हूँ हिंवड़े री गाथा नै
भूलूँ कियां भुलावै जग
बां गौरव री बातां नै

छोड़ राज रा सुख सपना,
देखूँ बुद्ध बन में जातां नै,
सुख सम्पत भेली कर सारी
देखूँ हर्ष लुटातां नै

महाकाल रै मन्दिर मांया
देखूँ शीश चढ़ातां नै
चित्तोड़ी केशरिया देखूँ
हंस हंस माथ बढ़ातां नै

कियां बिसारूं बता जगत
झुंड सतियां रा बल जातां नै
ऊँचो राखण खातर सिर बां
जंगल जंगल फिरतां नै

धर्म तणा पग पग मरिया
एड़ा ऊँचा रजपूतां नै
भूलूँ कियां भुलावै जग
बां गौरव री बातां नै

हूँ कियां रुकूँ रण मैं जातो

हूँ कियां रुकूँ गौरव गातो
है खून अजहूँ म्हारो रातो

ऑज्युँ तलवार पड़ी कटि मैं
बैरी रण आंगण मैं ऊभा
रीसां बलै जवानी कूदै
जोर आज ले तूँ अजमाँ

खड़ी भवानी खप्पर ले
म्हारी प्यास बुझा बोली
वीर वसुन्धरा री आंख्यां मैं
छलकै है आंसू री रोली

हूँ कियां रुकूँ रण मैं जातो
जद खून तपे म्हारो तातो

कायर जीणो चावे जग मैं
शान्ति शान्ति री रटत करै
बैठा सूता खावण रा नित
नुंआ नुंआ प्रचार करै

तृष्णा री लाय बुझी कद है
कद तूफान रुक्या दीवारां स्युँ
मौत रुकी कद रोणे स्युँ है
चुकी सदा बलिदानां स्युँ

हूँ संकूं कियां खाण्डो बातो
बैरी जद मद मैं है मातो

जिण खातर जौहर ज्वाला मैं
डबड़का ले सतियां बलगी
पग पग खेतां मैं कट्या बढ्या
बांरी तो बात रही अलगी

ए गढ़ री सूनी बुर्जा जोवै
कवि री घणी आतमा रोवै
मोटयारां री मूँछ्यां मैं
देखां कदसी बल पड़ जावै

इतिहासां रो ऊँचो माथो।
ओ झुकै कियाँ आतो जातो॥

कहदिया मर्यो रजपूत अठै

हूँ चढ़ धोरे किल्ली दूँला
थे तालां मैं भेला हो जाया
हूँ चोट नगारे पर दूँला
थे घोड़ां नै आगे फेंक्या

हूँ गौरव गीत सुणाऊँ जद
थे हर हर महादेव बोल्या
हूँ घोड़ो दे-देस्युँ आगे
थे म्हारे लार लार चाल्या

दुसमण री तोपां गाजेली
गोले स्युँ आभो कांपेला
गोल्याँ स्युँ छाती बिंध ज्यासी
धरती रो कण कण धापेला

तोप देख रुक जाया मत
डरज्यो मत तीखा भालाँ स्युँ
खाई स्युँ बन्दूकाँ छूटे
टकरे सीने री ढ़ालाँ स्युँ

तोपां नै देख याद आसी
बाबर नै मुगलां रो सन्देसो
दो हाथ मरण मारण रा है
रजपूत दांव जाणे ना तीजो

सन सन करती गोल्यां आसी
तीखोड़ा भाला खुभ ज्यासी
पण हाथां मैं तलवारां रहतां
लोही रा दरियाव बहासी

अरियां रो घेरो चोड़ो है
दुसमण गिणती मैं है अपार
बचणे री एक ठौड़ कोनी
मरणे रा मौका है हजार

बढ़ जावे ज्युँ तूफान बढ़े
फूटे ज्युँ ज्वालमुखी फूटे
हुँकारां स्युँ आभो थर'रावे
दैर्यां पर तरवारां टूटे

जावै डावी कदै जीवणी
चारूँ कूँट फिरै तरवार
लासां बिछसी मारग माथे
घायल करसी हाहाकार

तपयो तावड़ो हौंठ सूखग्या
दुसमण री सैना ज्यादा है
हुयो चालणी सो शरीर पण
मिटी न लड़णे री आशा है

बचपण रो साथी पड़ ज्यासी
टूटयोड़े दरखत ज्युँ जाणै
छिन मैं पलक मिली मिटज्यासी
तणसी बैरयां पर तण जाणै

हूं लड़ लड़ घायल हो ज्यासुँ
और सांझ हुवे मर जाऊँला
घावां स्युं बगते लोही मैं
जद चांद सितारा चमकेला

आखी रात अमूंजो रहसी
परभातां पंछी गाय उठै
गैले बगतो कोई पूछे तो
कह दिया मरयो रजपूत अठै

दिल्ली लेवण रा सपना तो

दिल्ली लेवण रा सपना तो
अजहुँ नींद हराम करै है
चौहान निरादिन बीत गया
पण झुक कुण तन्नै सलाम करै है

कितरा महल मालिया टूट्या
कितरा मन्दिर देवां रा
कितरा सन्त मरया निरदोषी
कितरा तीरथ सेवा रा

बलती अगनी मैं राणयाँ कूदी
केशरिया कर कर कट्या बढ्या
थारे खातर दिल्ली कितना म्हे
हाथी चढ़ियां घोड़ां चढ़ियां

रणत भँवर हमीर देव जद
हठकर शीश चढ़ायो हो
थारे बदले बारह बरसां रो
बादल में कटवायो हो

फूलां सी कंवली पदमण वाली
थारो हियो कद हाल्यो
भूख मरया अर मरया प्यास
पण सदा कसूम्बो घोल्यो

बींद बणायो हो जैसलमेर
किले मांया ब्यांव रचायो
दुसमण री खातर मैं मिटग्यो
पण तन्ने भूल कद पायो

एक हाथ एक आंख और पग
रण मै जाय गमाई
अस्सी घाव बोल्या ए दिल्ली
मने भूल मत ज्याई

थारे दुःख मै मरतां दिल्ली
दो मुट्ठी धान नहीं दीन्हो
केड़े मुँह जाऊँ दिल्ली
प्रताप बिरह प्रण कीन्हो

पातल खाय पथर पर सोतो
नहीं बिछाणो कीनो
लोही रंगदी हल्दी घाटी
पण दिल्लीपत नहीं कहणो

फेंक कटारी घोड़ो कूद्यो
रह्यो आगरो पसकाड़े
जमना मैं डूब गई क्योंनी
डाकण ऊभी मुख फाड़े

देख किशनगढ़ हवेली आज
हाडी चढ़ घोड़ी निसरी
ले लोही ले लोही दिल्ली
हूँ मरती थन्ने न बिसरी

जुग बीत्यो कद बां बातां नै
अंग्रेजां आ दरबार कर्यो
हूँ तो कर्जन देख्यो कोंनी
बो खाली हो'क बो हो भर्यो

दिल्ली थारी जद जद हर आवे
आंखड़ल्यां रो पाणी बह जावे
युगल। भगतां री भीड़ देख
म्हारो रगत उबल आवे

कांई ए चांद बता आभे रा
म्हारी दिल्ली री बातां
दुखड़ो बढ़सी तारो टूट्यो
रोवो मत हे रातां !

बिछड़यां म्हाने जुग घणा हुया
ओलखतां आंख्यां भर आसी
म्हारी है दिल्ली तूं म्हारी
म्हारो तो रोम रोम कह देसी

आवुं हूँ दिन दिन रात बळ्यां
मिलस्युं परभाते किरणां मैं
धिक्कार दिल्दो बिन राजपूत
थारे जीणे अर मरणें मैं

जद इंयां बगावत हूँ करदी

गौरव नै पाछो ल्याऊँला
कांई गलत कहावत हूँ कहदी
अड़ियो रै धर्म मारग माथे
जद किंयां बगावत हूँ करदी ?

जद हठ कर औरंग ब्याव रो
ले सैना लाखुँ ही चाल्यो
रूप बणा दुल्हे रो सुन्दर
भर घमण्ड उछल्यो हाल्यो

रूपनगर रे महलां मांय
घणी उदासी बापरसी
चारुमती रे कारण आज
राज विपत्ति आ पड़गी

आज अचाणक मेवाड़ी
दरबार लग्यो गौरवशाली
रोके कोई हिम्मतवालो
आवे आँधी काली पीली

कांकण डोरा खोल्या कोनी
बींदणी ले आयो बालम
दिल्ली री फौजां रोकण नै
जावेला चुंडावत आलम

शंख बज्या अर बज्या नगारा
चुंडावत री घोड़ी हींसी
महलां बीच झरोखे स्युँ
देखे ही हाडी हिरणी सी

भेज्यो आ'रे सेवक महलां मै
ल्यानी अन्तिम सैनाणी
जंग जीतां ला या हारांला
मरतां मन मै आ रह जाणी

सेवक हाथ जोड़ ऊभी
कांई देदूं राणी सोची
इतरो वीर मिल्यो बालम
हूँ कियां रहूँ इतरी पोची

लेजा रे शीश सुहागां री
सेवक नै दे हाथा बोली
चुंडावत देख्यो उछल् पड्यो
रग रग मैं बिजली सी चाली

बाघण नै व्यावण आयो हो
रूप सजा गीदड़ आलो
छत्री धर्म बचाणो हो जद
इयाँ बगावत हूँ करदी

कावड़ मैं ले निसरयो खीची
जसवन्त रा दोन्युँ टाबरिया
दुर्गे नै दरबारां तेड्यो
औरङ्ग री मन नाखी करियाँ

जे टाबरिय दे सूंप म्ने
दूं मारवाड़ रो आधो राज
नहीं तो लेस्युं धींगा धींगी
कहदुं साफ बात हूँ आज

सुणतां ही दुर्गो तड़क गयो
आँख्यां रा डोरा लाल हुया
है मारवाड़ राठोड़ां री
ऐसी कोई राठोड़ां मरियाँ

थे इतरा अपजोरा हा तो
परणी क्यूं नी चारुमति
चुंडावत माला पहर लड्यो
कठै गई फौजां बढ़ती

राणाँ रा माथा काट बगावो
करलोनी केशरिया भेख
दुर्गे रे हाथ पड़ी तरवार
करसी चामुण्डा देख देख

महेशदास रणवासां माँय
कह्यो आज दो राणयाँ शीश
मरणे री बेला आ पहुँची
रजपूत लड़ेला कर कर रीस

सगली राणचाँ तो शीश दिया
पण हाडी तो दीनी तलवार
दुसमण नै कांई ठा पड़सी
हूँ बदलो लेस्युं मारोमार

ललकाराँ पड़गी दिल्ली री
गलियाँ मै लोही बिखर गयो
जदतक संभले दुसमण इतरे
कोई होली खेल गयो

मारवाड़ री मस्ती पीवण
चाहतो हो औरंग मतवालो
राखण चाही लाज धरा जद
इयाँ बगावत हूँ करदी

पण नहीं झुक्या सो नहीं झुक्या

कितरा दरियात्र उलड़ आया
आफ़त रा परबत टूट पड़्या
पण नहीं झुक्या सो नहीं झुक्या ॥

खीरा बरसाती तोपां चाली
मौत सामने ही मतवाली
पण अड़्या रह्या सो अड़्या रह्या ॥

राज तख्त रा लालच आया
बन २ घणा घणा भटकाया
पण डट्या रह्या सो डट्या रह्या ॥

आडी आई मिरगानेणी
रूप सलोनी सोना भरणी
पण नहीं रुक्या सो नहीं रुक्या ॥

जौहर नै कर कर हार गया
शाका नै कर कर धाप गया
पण नहीं मिट्या सो नहीं मिट्या ॥

हाथ्यां री सामी लगी कतार
दूजे कानी तोपां री मार
पण लड़्यां गया सो लड़्यां गया ॥

किले री भींतां सैंठी ही
दरवाजे री शूलां तीखी ही
पण भिड़्या रह्या सो भिड़्या रह्या ॥

गौरी, बाबर, अकबर आया
संग तुफानी लश्कर लाया
पण नही मुड़्या सो नही मुड़्या ॥

गिणती लाख सामने हूती
इने एकली ही रजपूती
पण नहीं हट्या सो नहीं हट्या ॥

मंजिल पग रे हेठे आई
दुनियां करती ही वाहवाई
पण बढ़्या गया सो बढ़्या गया ॥

हूँ तो भोलो पग पग भूल्यो

हूँ तो भोलो पग पग भूल्यो
हँस हँस माथा देतो ग्यो
कुण प्यार दियो-कुण धोखो
ज्यूँ जिण दीनो लेतो ग्यो

जहर भर्योड़ो म्ने निगह ही
माफी जद मांगी गौरी
आँख्यां फोड़ गलै मैं म्हारै
लोह लटका दीनो भारी

खावण ने भाखर रा टुकड़ा
पीवण ने शीशो गाल्योड़ो
आगनी री लपटां में उण घड़ी
म्हारो अंग अंग बाल्योड़ो

बीं झुलसाती बेला में क्यूं
प्राण वजर ज्यूँ होग्या हा
धन म्हारी फूटी आंखड़ल्यां
आंसू तो जाणै सोग्या हा

हा हाकर हँसियो गौरी
कट कट दांत बोलिया उण घड़ी
इतरे दांता आ पड़ी गदा
बोल्यो इण सोमनाथ तोड़ी

कठै गई ताकत मद माती
कठै गई बा रण रजपूती
घायल ही मर जातो जे ठा
होवेला इसड़ी अणहूँती

बदले री आग लगी प्राणा
तन तन म्हारो खून हुयो
कठै भवानी गई उण बेला
शंकर तूँ क्यूँ मर न गयो

हूँ तो भोलो पग पग भूल्यो
हँस हँस माथा देतो ग्यो
कुण प्यार दियो कुण धोखो
यूँ जिण दीन्हों लेतो ग्यो

[illegible] अल्लादीन किले मैं
[illegible] आयो रूप सुरंगो
[illegible] भरोसो दुश्मण रो म्हें
[illegible] गयो जहरी नागो

कितरा रूप बल्या अगनी मैं
अरमान कितांरा खून करया
जौहर मैं लांप लगा दीनी
कर कितरा केशर भेख मरया

[illegible] घाव भरया कोनी
[illegible] पर ज्यूँ जाय भिड़्यो
[illegible] जीते मुगल बापड़ा
[illegible] लोदी पलट पड़्यो

घायल हो पण घाट्यां मैं
देख्यो दुश्मण साथै भाई
घिरयो रह्यो पण झुक्यो नहीं
मैं घास बणी रोटी खाई

इतरा इतिहास रच्या पण मैं
घोड़ै पर नींद सदा काढी
कोई बी जुग री बात करूं
सेलै में पो खाई बाटी

औरां स्यूं प्यार मिल्यो न मिल्यो
म्हाने म्हारो घर बिसर गयो
आँख्याँ ग आँसू पलक लियाँ
चुपचाप बठै स्यूँ निसर गयो

हूँ तो भोलो पग पग भूल्यो
हँस हँस माथा देतो ग्यो
कुण प्यार दियो कुण धोखो
स्यूँ जिण दान्हो लेतो ग्यो

कोई मारे एड़ी खेंच कटारी

कोई हम्मीर सरीखो हठ करले
प्रताप सरीसो पण धारी
मरयो हुवे दरबार बादशाह उठभागो
कोई मारे एड़ी खेंच कटारी

कोई रण री सैनाणी चुंडावत
माथां री माला पहरावे
कोई घोडा रे बदले बल्लुजी
चाँपावत पाछो मर आवे

रण री झुंझूला किया कोई
पढी कविता पहलां करवावे
पढी मीत मरया कल्लाजी
कवि आपणी कविता बिसरावे

मांचे री मौत मरां किंकर
कोई मरणे रा समचार मंगावे
हो जावे भाटी चाचक कुण
इण रा बांका दान चुकावे

कुण ही आवे पीथल फिर
मनके वैर माफ कर देवे

गजनी री जैलां माथे नै
बो काट खाँग ओज्युं बापे

हो जावे इसड़ो सगतावत
शूलाँ स्युं छात्याँ पे देवे
विश्वास करावण नै पाछो
हरदौल जहर पी सो जावे

स्वामी रे खातर कोई बढ़
ले मुगट शीश न काट बगावे
स्वामी धर्म बचावे आज
कुण झाला री रीत निभावे

रण री हाक पीठ घोड़े री
कोई मस्ती भरी नींद ले लेवे
खायोड़ो लूण उजाले दुर्गो
कुण परम्परा नै अमर बणावे

कोई छतोड़ां मै जागे फिर
राखे रजपूती बिन माथे
जूझै, मरे, अमर हो जावे
जस ले जावे सुरगां साथे

ब कठै गया सिरदार

गमग्या मुगट ठीकरयां में
गलीयाँ में सिणगार
राणयाँ ऊभी खेत खड़े
ब रुलग्या राजकुंवार

ढूंढू धरती आभे ढूंढू, ढूंढू का पाताल ।
[illegible] नीर हुयो रो रो ब कठै गया सिरदार ॥

बादल ज्युं गरज्या करता
बिजली ज्युं कड़क्या करता
समन्दर री चालां चलता
माखर ज्युं अड़जाया करता

[illegible] मे रेलपेल रण री हेलाहेल मची ।
[illegible] बंध्या पायगाँ हींसे ब कठै गया असवार ॥

होडा होड बंध्या करता
मरता कर कर चाव
झील बणा देता लोही री
तिरता सिर बिन नाव

[illegible] फिरै पीडो मदमातो कुण करसी मतवाल ।
[illegible] पर पोल कचुम्बो बा करसी कुण मनवार ॥

होतों घणो सियालो बिरखा पड़ती
मन री दाह नहीं पण बुझती
बात कहयोड़ी कुल न लाजै
हींवड़े घाव जियां कोई चुभती

माँ रो धरती और धर्म रो आज चुकासी कुण कर्जो
दाँत निसारे बैरी उभो बा कुण खेंचे तरवार

किला जीत दान मे देता
बेमोल लुटाता राज सिंघासण
ललकारां स्युं रण भर देता
निज लोही करता पिंड तर्पण

खुसग्या महल मालीया मुगट सिंघासण सें खुसग्या
कहै गया केशरिया कपड़ा व सतीयाँ रा तिवहार

एक ढाल देत बैरी न
वार रोकता छाती पर
पैदल री कुण बात बिचारे
टूट पड़्या करता हाथी पर

आँखड़ल्याँ रों नीर रोकलुं अगनि बालुं बदले री
ढुं भवानी रो लुं नाम अब बांधु हथियार

तूँ क्यूँ हँस्यो बतांदे बीरा

तूँ क्यूँ हँस्यो बतादे बीरा ।
खुसग्या थारा राज सिंघासण
[illegible] ड्या सै दाटा रा हीरा ॥

मत सरस देख रुँखां रा रोही
फूल हँसे अवजाण बापड़ा
बीत्या दिवश सुरंगा लागे
मत ४र रुत रा कोड बावला

[illegible] उजळ दियाली केड़ी,
तूँ क्यूँ बाली दिवला बीरा ।

उमड़े आज कलाण काली
गावे सावण तीज सुहागण
धुड़ा दिनां डफड़ा बजसी
आसी रंग रंगीलो फागण

[illegible] देख जिवड़ो हुलसाई,
[illegible] गगन रा तारा ।

नाचेला संसार मगन हो
गावेला गीत खुशीयाँ में भर
काठो रही बादकर मन मे
धूजे धरती कांपे अम्बर

चोट कालजे एड़ी लागी,
बलता रहसी मन रा खीरा।

केड़ो घर गृहस्थी रो झंझट
केड़ो ब्याँव सगाई केड़ी
इण खोटी वेला मं दीसै
षोची बात नहीं उण जेड़ी
किंयां जोड़सी इती बतादे
इण हिंवड़े रा लीरा लीरा

रोक मती दुःखड़े रा आंसू
पागल री मनवार करै मत
जुग री झोली भरणी पड़सी
साबत माथो लियां फिरै मत

[illegible] फिरै बावली
[illegible] सन री मीरां

ढकले थारा घाव घणेड़ा
खोल मती दुख लाजां मरसी
आस निरासा छोड़ बावला
आ तो तनै निभायाँ सरसी

[illegible] बात भूलज्या
[illegible] पछै ई पीड़ा

– मत पूछ –

मत पूछ हिंवाल्यो री देसी
आभै रा नखतर झड़ ज्यासी
तूँ शेष नाग ने छेड़ मति
विष्णु री पलक उघड़ ज्यासी

मत तोड़ समाधी शंभू री
जग में पाछो प्रलय आसी
नदियाँ चढै उफाण सजोरो
रत्नाकर गहरो अरड़ासी

आ बता मनै कुण सै परबत
तूफान सह्या नहीं छात्यां पर
बै चोट्यां सदा रही ऊँची
बै झुक्या नहीं दिन आथ्या पर

ऐड़ो जुग दे बता मने
जिण में सीता नै हरी नहीं
रावण आयो नहीं छल करणे
कद विपद राम में पड़ी नहीं

[illegible] री [illegible]का बली नहीं
[illegible] राम री हुई नहीं
[illegible] [illegible]र कद कट्या नहीं
[illegible] र्म नै मिली नहीं

द्रोपद ने भरी सभा में ल्या
कद लाज गमाई नहीं बता
जुवे में हारया पाण्डुड़ा
बैठ्या कर नीचो माथो सदा

[illegible] मिल्यो कृष्ण नै
[illegible] दी सूई री नोक
[illegible] कुंवारो रह्यो नहीं
[illegible] नहीं दे ताल ठोक

री भाई ले दुर्जोधन कद
रण में नहीं खत्म हुयो आखिर
कद सत्य न्याय हित हुयो नहीं
अवतार धरम रावण खातर

कुण देखै दिल रा घाव किता
अरमान जग्या अर बुझया अठै
सुख दुख रा जुगड़ा बीत रह्या
पण लाय हिंयें री बुझी कठै

कद बन बन रुलता फिरया नहीं
कद भूख प्यास ने सही नहीं
हारया पण हल्दी घाटी में
कद तेग दुधारी बही नहीं

कद दिल्ली रे दरबार बीच
अपमान हुयोड़ो सहयो अठै
पतसाह छोड सिंहासण नाठयो
चली कटारी जठै जठै

छल बल थारो लियो आज
सब ताज राज इज्जत थारी
उठ अर्जुन जुग रा सैनानी
तज ई जीवन री लाचारी